विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – चतुर्थ **दिनांक -12- 10-2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -12 प्रतिज्ञा नामक कहानी के बारे में अध्ययन करेंगे।

कल भी कहानी के बारे में अध्ययन कराया गया था आज उसके आगे अध्ययन करेंगे।

" हाँ हाँ, यह काम तो मैं बहुत आसानी से कर सकता हूँ।' लुटेरे ने कहा।

महात्मा फिर बोले, " अच्छी तरह से सोच लो, करनी और कथनी में बहुत अंतर होता है। क्या तुम सचमुच प्रतिदिन मेरे सामने आकर अपने गुनाह कुबूल करोगे?"

" हाँ महाराज! मैं प्रतिदिन आपके पास आकर अपनी गलती स्वीकार करूँगा।"

यह कहकर लुटेरा चला गया।

इस घटना के बहुत दिन बीत गए लेकिन वह लुटेरा महात्मा के पास कभी नहीं आया। एक दिन महात्मा के एक शिष्य ने उनसे पूछा, " महाराज! वह लुटेरा फिर लौटकर नहीं आया?"

महात्मा बोले, " अब वह कभी नहीं आएगा क्योंकि अब वह सुधर गया होगा। अपराध करना आसान है लेकिन उसे सबके सामने स्वीकार करना बहुत कठिन है।"

कुछ समय बाद पता चला कि उस लुटेर ने सचमुच लूटपाट करना छोड़ दिया था। अब वह एक अच्छे इंसान की तरह जीवन बिता रहा है।

शब्दार्थ

सादगी - सादा जीवन

उल्लंघन - पालनन करना

मैला-कुचैला- अत्यंत गंदा

कुबूल-स्वीकार करना

व्यतीत -बिताना

प्रतिज्ञा-प्रण

अवगुण-बुरे गुण

दृढ़ता - अटलता

स्नेहपूर्ण - प्रेम से युक्त

आधार - नींव

अन्य भाषाहों से आए हिंदी में शब्द

इंसान, गुनाह, कुबूल

विशेष: इन शब्दों को इस तरह भी लिख सकते हैं:

जिंदगी - जिन्दगी

अंदर - अन्दर

इंसान - इन्सान

शब्दार्थ लिखकर याद करें।